आधुनिक भारत का इतिहास

बीएएचआई -201
इकाई एक-भारत में यूरोपियों का आगमन

प्रस्तुतकर्ता

डॉ॰ एम॰एम ॰जोशी

इतिहास विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रस्तावना

सन 1453 में तुर्को द्वारा कुस्तुनतूनिया जीत लेने के कारण यूरोप के साथ भारत का व्यापारिक मार्ग अवरुद्ध हो गया | अब यूरोप के लोंगों को पूर्व का माल मिलना दुर्लभ हो गया | पूर्व के मसाले और कपड़ा यूरोप के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र थे | अतः यूरोपीय व्यापारियों ने भारत के साथ व्यापार करने के लिए नवीन जल मार्ग की खोज करने का निश्चय किया | इस प्रकार तुर्क सता के अभ्युदय ने यूरोपीयों को एक महान साहसिक कार्य करने की प्रेरणा दी | डाक्टर ईश्वरी प्रसाद के अनुसार "तुर्क साम्राज्य के उत्थान के साथ 15 वीं शाताब्दी में व्यापारिक मार्गो पर तुर्कों का अधिकार हो गया | पूर्वी व्यापार अवरुद्ध हो गया | प्राचीन मार्गों के बंद हो जाने से नए मार्गों की खोज को भारी महता प्राप्त हुई | 14 वीं तथा 15 वीं शाताब्दी में यूरोप के पुनर्जागरण ने वाणिज्यवाद या समुद्री व्यापार को प्रोत्साहित किया| इस समय के आविष्कारों, मुख्यरूप से दिग्दर्शक यंत्र की सहायता से इटली, स्पेन तथा पुर्तगाल के व्यापारियों ने नए समुद्री मार्गों की खोज की, जिससे भारत तथा एशिया से सीधा सम्पर्क तथा व्यापार संभव हो सका |

उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको यूरोप की विभिन्न शक्तियों के भारत आगमन , उनके प्रारंभिक उद्येश्यों , भारत में उनकी कारगुजारियों एवं वास्तविक उद्येश्यों से परिचित कराना है। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप निम्नांकित जानकारियां से परिचित सकेंगे :

1. पुर्तगाली व्यापारियों का भारत में आगमन:
2. पुर्तगालियों की असफलता के कारण
3. पुर्तगाली शासन का प्रभाव
4. डचों का आगमन
5. डचों की सफलता एवं असफलता के कारण
6. अंग्रेजों का भारत में प्रवेश
7. ईस्ट इण्डिया कम्पनी
8. फ्रांसीसियों का आगमन

पुर्तगाली व्यापारियों का भारत में आगमन

1488 ई॰ में अफ्रीकी महाद्वीप के दक्षिणी किनारे केप ऑफ गुड होप तक पहुँच गया | वहाँ से वास्कोडिगामा 1497 ई. में मालिन्दी तक तथा 1498 ई. में एक अरब व्यापारी की सहायता से कालीकट तक पहुंचा | जब उससे, उसके आने का उद्धेश्य पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि वह भारत में इसाई धैर्म के प्रचार तथा गर्म मसालों के व्यापार के लिए आया है | इस प्रकार 1498 में, इस नए समुद्री मार्ग की खोज का श्रेय वास्कोडिगामा को जाता है |

वास्कोडिगामा की इस सफलता से उत्साहित होकर पुर्तगाल ने कैब्राल को 13 जहाजों के एक अन्य बेड़े के साथ अगले ही वर्ष भारत भेजा | कैब्राल 1500 ई. में कालीकट पहुंचा | कूटनीति में कैब्राल, वास्कोडिगामा कि बराबरी न कर सका और शीघ्र ही कालीकट के हिन्दू शासक जमोरिन के साथ उसका मनमुटाव हो गया |

इस आंशिक असफलता के कारण कैब्राल के स्थान पर वास्कोडिगामा को एक बार फिर भारत भेजा गया | 1502 में जब वह भारत आया तब तक पुर्तगालियों ने यह महसूस कर लिया था कि भारतीय व्यापार में उनका हित तभी सुरक्षित हो सकता है जब अरब व्यापारियों को भारतीय व्यापार से निकाला जाए

1504 में पुर्तगाल से अल्मीडा को विधिवत रूप में वाइसराय नियुक्त करके भेजा गया |

अल्मीडा ने भारत में पुर्तगाली राज्य स्थापित करने कि दिशा में विशेष योगदान दिया परन्तु भारत में पुर्तगाल के व्यापार को आगे बढ़ाने तथा स्थायी रूप से फैक्ट्रियों को स्थापित करने का श्रेय अल्फॉन्सो डी अलबुकर्क (1509-1555) को प्राप्त हुआ|

1510 में उसने बीजापुर के युसूफ आदिलशाह से गोवा जीत लिया| 1511 में पूर्वी एशिया में मलक्का पर अधिकार कर लिया| 1512 में बीजापुर राज्य से बानासेरिय का किला जीता| 1515 ई. में फारस की खाड़ी में व्यापारिक अड्डे आर्मुज पर अधिकार कर लिया| अफ्रीका में सोक्रोवा तथा लंका में कोलम्बो पर भी अधिकार किया| गुजरात के दियु पर पुर्तगालियों का अधिकार हो गया| अलबुकर्क ने गोवा को अपनी राजधानी बनाया तथा वहाँ वाणिज्यिक गतिविधियों को तेज किया|

पुर्तगालियों की असफलता के कारण

निश्चित रूप से पुर्तगाली असफलता का मुख्य कारण समुद्र पर उनका नियंत्रण कमजोर होना था| लेकिन इसके साथ कुछ और कारण भी थे जिन्होंने मिलकर पुर्तगाली पतन को अवस्यंभावी बना दिया| वास्कोडिगामा तथा अलबुकर्क के जैसे दुर्दशी एवं कूटनीतिज्ञ व्यक्तित्व का अभाव उनके उतराधिकारियों में साफ दिखाई दे रहा था| पुर्तगाली बाद के समय में व्यापार तथा शासन के प्रति उदासीन हो गए थे| धन बटोरने के लालच ने पुर्तगाली व्यापारियों और प्रशासकों को प्रशासन तथा न्याय के प्रति उदासीन बना दिया था|

भारतीयों को पुर्तगालियों के प्रति घृणा भी उनके पतन का एक कारण सिद्ध हुई| अधिक धन का लालच, क्रूरता की नीति तथा प्रशासन के प्रति उदासीनता ने उनकी शक्ति को सीमित कर दिया|

पुर्तगाली शासन का प्रभाव

यद्धपि, पुर्तगाली भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने में असफल रहे फिर भी उनके शासन ने आधुनिक भारतीय इतिहास में अपनी गहरी छाप छोड़ी है| पुर्तगालियों ने ही अन्य यूरोपीय शक्तियों को भारत में प्रवेश करने का मार्ग दिखाया। पुर्तगाली भारत में युद्ध की एक नयी तकनीक ले कर आए थे| उनके द्वारा बंदूकों के इस्तेमाल ने भारतीय शासकों को भी इस दिशा में पहल करने के लिए उत्साहित किया| नये व्यापारिक मार्ग खुलने से भारतीय उत्पाद अब अफ्रीका तथा ब्राज़ील तक पहुँचने लगा था| व्यापारिक मार्ग को समुद्री लुटेरों से सुरक्षित रखने में भी पुर्तगालियों का महत्वपूर्ण योगदान है| नई भौगोलिक खोजों में दिलचस्पी रखने के कारण पुर्तगालियों ने मानव ज्ञान को बढ़ावा दिया| कुछ सामाजिक कुरीतियों को भी समाप्त करने के लिए पुर्तगालियों ने पहल की । पुर्तगालियों द्वारा बड़े पैमाने पर भारतीय महिलायों से वैवाहिक संबंध स्थापित करने से सती जैसी सामाजिक बुराई को कम करने में थोड़ा मदद मिली| ऐतिहासिक एवं भौगोलिक साहित्यों की रचना पुर्तगालियों का एक महान योगदान था|

डचों का आगमन

1580 में पुर्तगाल पर स्पेन का कब्जा हो जाने के कारण डच व्यापारियों के लिए लिस्बन का द्वार हमेशा के लिए बन्द हो गया| व्यापार की इन आवश्यकताओं ने एक नए राजनैतिक समीकरण को जन्म दिया| अब इन व्यापारियों ने सीधे व्यापार करने के नीति अपनाई| डच व्यापारियों को यह लगने लगा कि जब तक पुर्तगालियों के समुद्री शक्ति एवं अधिपत्य को समाप्त नहीं किया जाएगा, भारत द्वारा गर्म मसालों की आपूर्ति संभव नहीं है| डच पर्यटक लींस कूटिन पुर्तगालियों के संपर्क में रह चुका था तथा उसे भारत के व्यापार की पर्याप्त जानकारी थी| उसने एक योजना बनाई जिसके अनुसार 1595 में हाउटमन एक व्यापारिक बेड़ा लेकर इन्डोनेशिया के बैटम क्षेत्र में पहुंचा| यहाँ पुर्तगालियों के द्वारा व्यापार तो किया जा रहा था लेकिन सैनिक दृष्टि से वे मजबूत नहीं थे| जल्द ही डचो ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया| 1602 में बानीवेल्ट ने कई छोटी कम्पनियों को मिलाकर एक यूनाइटेड डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की जिसे डच शासन द्वारा व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया गया| जल्द ही डचों ने न केवल मलक्का तथा इन्डोनेशिया बल्कि भारत के पुलिकट पर भी अपना कब्जा जमा लिया| 1636 में डच व्यापारियों ने मालाबार तथा सीलोन के कालीमिर्च तथा इलाइची के व्यापार पर एकाधिकार करने के उदेश्य से पुर्तगालियों के व्यापारिक अड्डों पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया|

1661 में डचों द्वारा पुर्तगाली व्यापारियों से मालाबार छीन लिया गया| शीघ्र ही गोवा, दमन एवं दीयु छोड़कर पुर्तगालियों के अधीन शेष सभी भाग डचों के अधिकार में आ गए|

डचों की असफलता के कारण

डचों कि व्यापारिक दिलचस्पी दक्षिण पूर्वी एशिया के स्पाइस आइलैंड में थी न कि भारत कि मुख्य भूमि में| बगैर राजनैतिक सत्ता की स्थापना के व्यापारिक एकाधिकार सम्भव नहीं था| डच मुख्य रूप से व्यापारी ही बने रहे , इसलिए वे भारत में बहुत अधिक दिनों तक नहीं टिक सके| असफलता का दूसरा कारण कम्पनी और डच शासन का संबंध था| डच व्यापारिक कम्पनी कभी भी स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करती थी बल्कि इस पर सरकार का सीधा नियंत्रण था| तीसरा कारण ब्रिटिश नौसैनिक शक्ति का डच नौसैनिक शक्ति से अधिक मजबूत होना था| चौथा, यूरोपिय राजनीति के बदलते समीकरण तथा फ्रांस और इंग्लैंड से लगातार होने बाले युद्धों ने डचों को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सैनिक शक्ति के रूप में भी कमजोर कर दिया था|

अंग्रेजों का भारत में प्रवेश

1600 ई. में लन्दन के व्यापारियों द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की औपचारिक स्थापना हुई|1608 में विलियम हॉकिन्स सूरत पहुंचा| वह मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ|हॉकिन्स को अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि मुगल दरबार में पुर्तगालियों का अधिक प्रभाव था| 1612 में अंग्रेज़ कैप्टन, बेसेंट ने स्वाली नाम के स्थान पर पुर्तगाली सेना को बुरी तरह पराजित कर दिया| मुगलों ने अंग्रेजों की इस वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें सूरत, कम्बाया तथा अहमदाबाद में व्यापार करने की आज्ञा दे दी| 1616 में टॉमस रो ईस्ट इण्डिया कम्पनी का राजदूत बन कर भारत आया| टॉमस रो को अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली तथा मुगलों की राजकीय सीमा में अंग्रेजों को व्यापार करने की आज्ञा मिल गई| शहजादे शाहजहाँ ने अंग्रेजों पर अपनी अधिक कृपा दृष्टि दिखाई तथा उन्हें बंगाल, भड़ौच तथा आगरा के क्षेत्रों में व्यापार करने कि आज्ञा प्रदान की | 1662 में चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगालियों से बम्बई दहेज के रूप में प्राप्त हुआ|

1707 में औरंगजेब की मृत्यु तथा तेजी से घटती मुगल साम्राज्य कि शक्ति ने कम्पनी को एक ऐसा अवसर प्रदान किया जिसका लाभ उठाकर कम्पनी, राजनैतिक सत्ता की स्थापना की ओर तेजी से बढ़ी| कम्पनी ने 1717 में फर्रूखसियर से तीन फरमान प्राप्त किए जिससे न केवल कम्पनी के व्यापार को बढ़ावा मिला बल्कि एक राजनैतिक शक्ति के रूप में उसकी साख भी मजबूत हुई| व्यापारिक एकाधिकार के युद्ध में पहले ब्रिटिश इस्ट इण्डिया कम्पनी को पुर्तगाली एवं डच व्यापारियों से युद्ध करना पड़ा एवं बाद में फ्रांसीसियों से|

फ्रांसीसियों का आगमन

पर्सीवल ग्रीफिथ ने भारत में फ्रांसीसी कम्पनी के विकास को तीन चरणों में बांटा है| प्रथम चरण मुख्य रूप से शांतिपूर्ण रहा| यह चरण 1715 में समाप्त होता है, इसमें फ्रांस के मुख्य शत्रु डच थे| दूसरा चरण 1740 में समाप्त होता है , पुनर्गठन एवं वाणिज्यिक विकास इस चरण की मुख्य गतिविधि थी|

1667 में सूरत में अपनी प्रथम फैक्ट्री स्थापित करने के 2 वर्ष के अंदर ही फ्रांसीसियों ने मसुलीपट्टनम् में भी फैक्ट्री स्थापित की| 1674 में फ्रांसिस मार्टिन ने बीजापुर के सुल्तान से पाण्डिचेरी प्राप्त किया जो आगे चलकर भारत में उनकी राजधानी बनी| डूप्ले के फ्रांसीसी गवर्नर बनने से पहले फ्रांसीसी कम्पनी ने माहे, कारिकल, कासिमबाजार तथा बालासोर में अपनी फैक्ट्री स्थापित कर ली थी| डूप्ले के काल में कम्पनी अपने शिखर पर पहुँच गई| डूप्ले ने भारत में कम्पनी के राजनैतिक हस्तक्षेप को बढ़ावा दिया| अतः जिस समय मुगल साम्राज्य अपने पतन की ओर बढ़ रहा था तथा क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हो रहा था, फ्रांसीसियों ने भी स्वएं को राजनैतिक रूप से स्थापित करने की पूरी कोशिश की| इस तरह का हस्तक्षेप निःसंदेह रूप से अंग्रेज़ कम्पनी को गवारा नहीं था| व्यापारिक एकाधिकार की अंतिम लड़ाई तीसरे कर्नाटक युद्ध में समाप्त होती है| कर्नाटक युद्ध की चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे| कर्नाटक युद्ध की सफलता ने अंग्रेजों के लिए भारत में राजनैतिक सत्ता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया|

सारांश

फ्रांसीसी पर्यटक बर्नियर के अनुसार, “उस समय का भारत एक ऐसा गहरा कुआँ था, जिसमें चारों ओर से संसार भर का सोना-चाँदी आकर एकत्रित हो जाता था, पर जिसमें से बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं था|” बर्नियर की टिप्पणी का कारण यह था कि, यूरोप में भारतीय उत्पादों की मांग बहुत अधिक थी, परन्तु यूरोपीय उत्पादों की भारत में मांग बहुत अधिक नहीं थी| अतः भारतीय उत्पादों को खरीदने का एकमात्र जरिया बुलियन था| भारत में व्यापारिक हित की संभावनाओं को देखते हुए यूरोपीय जातियों ने भारत में प्रवेश किया जिससे व्यापारिक एकाधिकार के युद्ध को जन्म दिया| मार्क्सवादी इतिहासकर आर. पी. दत्त ने भारत में उपनिवेशवाद को तीन चरणों में बाँटा था, जिससे प्रथम चरण वाणिज्यिक पूंजीवाद था|यही चरण व्यापारिक एकाधिकार के काल का प्रतिनिधित्व करता था| इसकी शुरुआत वास्को डी गामा के आगमन से होती है|प्रत्येक यूरोपीय जाति भारतीय व्यापार पर एकाधिकार कर अधिक मुनाफा कमाना चाहती थी|व्यापारिक एकाधिकार के मुख्यतः तीन सिद्धातं थे, प्रथम, व्यापार करने वाले देश का व्यापार पर एकाधिकार हो ताकि देश का अधिक से अधिक मुनाफा हो सके| दूसरा, देश के प्रमुख उद्योगों की सुरक्षा करना तथा तीसरा व्यापारिक देश को वित्तीय लाभ हो जिससे देश के बुलियन को बचाया जा सके| ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इन्हीं सिद्धांतों को अपनाकर भारत से अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना।